मिथिला की स्थापत्य कला

विष्णु, अकोर. जिला - मधुबनी

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

सांस्कृतिक जन-जागरण अभियान के अन्तर्गत

भारतीय पुरात्तव सर्वेक्षण,
मंदिर सर्वेक्षण परियोजना (उत्तरी क्षेत्र)
भोपाल द्वारा प्रकाशित
2005

मिथिला की स्थापत्य कला का गौरवमयी इतिहास

मिथिला की स्थापत्य कला अत्यन्त गौरवमयी है। मिथिला के ध्वंसावशेष हमारी प्राचीन संस्कृति कलां एव विज्ञान की समृद्धि के परिचायक है। मिथिला का पूर्व नाम मिथिला न होकर तिरहुत हुआ करता था वृहद विष्णु पुराण के अनुसार मिथिला के 12 नाम निम्नानुसार है :-

मिथिला तैरभुक्तिश्च वैदेही नैमिकाननम् ।
ज्ञानक्षेत्रं कृपापीठं स्वर्णलाङ्गपद्धति ॥
जानकीजन्मभूमिश्च निरपेक्षा विकल्मषा ।
रामानन्दकुटी विश्वभावनी नित्यमंगला ॥
गङ्गातीरावधिरधिगता यद्भवो भृङ्गभुक्तिः ।
नाम्ना सैव त्रिभुवनतले विश्रुता तीरभुक्तिः ॥
पुरुषोत्तम देव के त्रिकण्डशेषकोष में
गण्डकीतीरमारभ्य चम्पारणयान्तकं शिवे ।

विदेहभूः समाख्याता
तीरभुक्ताभिधौ मनुः ॥
भविष्य पुराण में
निमि पुत्रस्तु तथैव
मिथिर्नाम महान्
स्मृतः प्रथमं भुजबले येन
येहुतस्य,
पार्श्वतः निर्मितम्

स्वीयनाम्ना च
मिथिलापुरमुत्तमम् ।

राजनगर पैलेस, राजनगर.
जिला - मधुबनी

कंकाली मंदिर, राजनगर. जिला - मधुबनी

जबकि व्यवहारिक तौर पर मिथिला प्रचलन में होता था। यहां पर मैथिली भाषा

का प्रयोग किया जाता है। इस क्षेत्र के कण कण में इतिहास विभूति सन्निहित है। मिथिला के प्राचीन स्मारक मूकवाणी में अपनी अतीत की कहानी स्वयं कहते है और उसी को पुरातत्वेत्ता समझने का प्रयास कर रहे हैं।

मिथिला की प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर काफी समृद्धशाली रही है, किन्तु जनजागृति के अभाव के कारण इसे अभी तक हम सुरक्षित नही कर पाये हैं। ऐतिहासिककाल की समृद्ध धरोहर मिथिला में पाई गई है। मिथिला में यदाकदा विदेशी विद्वानो का भी आगमन होता रहा है। सन् 1834 तक स्टीफन्स एवं 1882-64 में कनिंघम, टी ब्लाश, स्पूनर आदि विद्वान मिथिला आये हैं। कनिंघम का कहना है कि चीनी यात्री ह्वेनसांग भी मिथिला क्षेत्र में आये थे।

मिथिला के मंदिरों का पुरातत्वीय सर्वेक्षण वर्तमान में **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के मंदिर सर्वेक्षण विभाग (उत्तरी क्षेत्र)** द्वारा किया जा रहा है। दरभंगा, मधुबनी, बेतिया, पूर्णिया जिले में स्थित विशेष तौर से ऐतिहासिक स्थलों के प्राचीन मंदिर स्थापत्य की खोजबीन एवं शोधकार्य वर्तमान में इस शाखा द्वारा की जा रही है। यहां मंदिरों की स्थापत्य कला के विकास के बारे में काफी जानकारियां मिल रही है। स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से दरभंगा, मधुबनी एवं समस्तीपुर के मंदिरों का अलौकिक रुप देखने को मिलता है। यह सभी मंदिर

अधिकांशतः पत्थर और ईटों के बने हुए है। सन् 1934 में आये भूकम्प के कारण यहां अधिकतर मंदिर ध्वस्त हो गये है, लेकिन कुछ मंदिर अभी भी शेष हैं, उन्हीं मंदिरों का पुनः जीर्णोद्वार यहां के रहवासियों द्वारा करवाया गया है। मिथिला के ऐतिहासिक स्मारकों में लौरिया नन्दनगढ़, लोरिया अरेराज, रामनगर का पंच शिव मंदिर, चम्पारण का नाम विशेष रुप से लिया जाता है। वैशाली, चेचर, हाजीपुर में काफी मात्रा में पुरातत्वविक सामान पाषाण कालीन औजार, सिक्के, मृदभाण्ड, मूर्तियाँ इधर-उधर बिखरे दिखते है जो कि शुंग और पाषाणकाल के परिचायक है।

दरभंगा मधुबनी के कुछ मंदिर उत्तरी स्थापत्य कला के मंदिरों से समानता रखते हुए प्रतीत होते है, उदाहरणार्थ मधुबनी तहसील में स्थित **भीटभगवानपुर** का तोरण द्वार उत्तरी स्थापत्यकाल के समकालीन लगता है। यहां पर अधिकतर पांच तरह के मंदिर देखने को मिलते है जो कि पुरातत्वीय दृष्टिकोण से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है । यहां के मंदिरों की स्थापत्यकला को निम्न पांच श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

1. **जिसमें वृत्ताकार छत तथा दो या तीन प्रवेश द्वार होते है। उदाहरणत: मधुबनी जिला मंगरौनी में स्थित नवरत्न मंदिर।**
2. **झोपड़ीनुमा छाजन मंदिर- से उड़ीसन स्थापत्य कला से मिलते जुलते दिखायी देते है। उदाहरणार्थ दोचारी मंदिर, एकचारी मंदिर, भीटभगवानपुर मंदिर**
3. **भद्रा अंगशिखर मंदिर**
4. **शिखर की तरह का मंदिर**
5. **गुम्बदनुमा मंदिर**

दरभंगा जिले के मुख्य मंदिर अहिल्यास्थान, पण्डौल, मब्बी, कपिलेश्वर, गण्डेश्वर, लालपुर, सिंगवाड़ और मधुबनी जिले में

परिचारिका, अकोर. जिला - मधुबनी

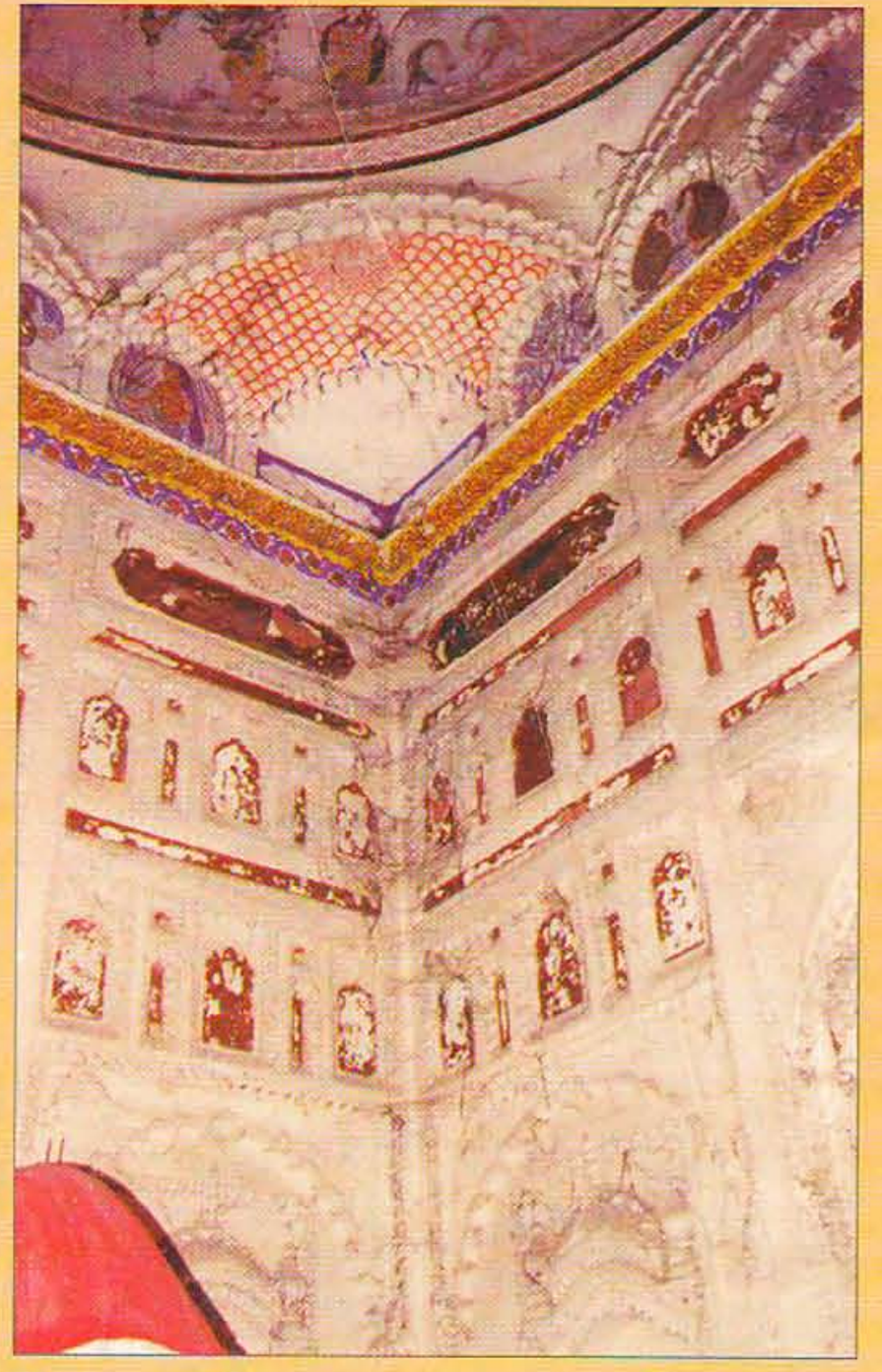

भित्ति चित्र, अहिल्या स्थान, कमतौल. जिला - दरभंगा

स्थित गिरिजास्थान मंदिर, डोकहर का राजशेखर मंदिर, भगवती पुर का भद्रकाली मंदिर, मंगरौनी का नवरत्न मंदिर, कोईलख का गुम्बदनुमा मंदिर, कलना का शिव मंदिर तथा उच्चैठ का काली मंदिर आदि, स्थापत्यकला के दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। उच्चैठ की देवी की मूर्ति आठवीं शताब्दी की मानी गयी है। देवघर (जसीडीह) मंदिर में पार्वती तथा महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति, उच्चैठ की देवी की मूर्ति के समकालीन है। भैरवबलिया की भैरव मूर्ति भी मूर्ति स्थापत्य कला का अद्‌भुत नमूना है । इस क्षेत्र में विभाग द्वारा पुरातत्वीय दृष्टिकोण से गहन शोध चल रहा है, जिससे मंदिर स्थापत्य कला के बारे में विशेष जानकारी मिलने की संभावना है।

PLAN OF

JOGESHWAR TEMPLE, NAHAR BHAGAVATIPUR, DISTT. MADHUBANI

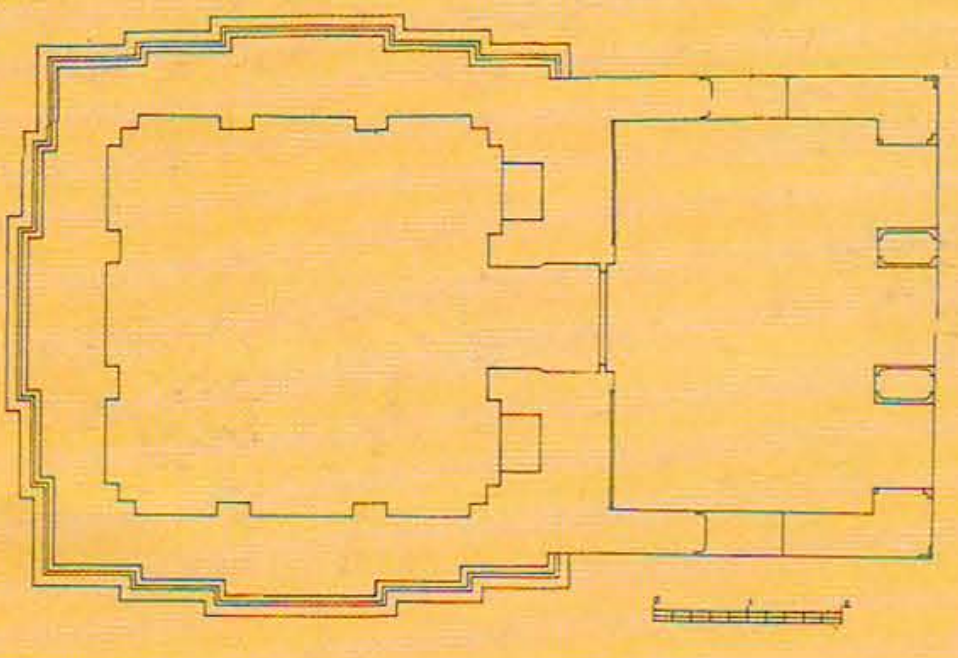

भित्ति चित्र, अहिल्या स्थान, कमतौल. जिला - दरभंगा

अधीक्षण पुरातत्वविद्

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

मंदिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.)

भोपाल (म.प्र.)

आलेख - डा. फणिकान्त मिश्र